जब अपने कमरे में अकेले रहने लगा तो अरविंद अक्सर मुझसे मिलने मेरे कमरे पर आता। अरविंद ने बीएचयू से ही बीएड, एमएड कर लिया था और उसकी प्राथमिक विद्यालय में नौकरी हो गई थी। उसकी पहली नियुक्ति नौगढ़ के किसी स्कूल में हुई थी। अरविंद को जब भी छुट्टी मिलती, वह भागकर मेरे पास आता और फिर हम दोनों किसी साहित्यिक पत्रिका की बातें करते। किसी लेखक या कहानी पर चर्चा करते। अरविंद बहुत अच्छी कविताएं लिखता था। मैं कई बार भोजन तैयार करता और उसे इस दौरान कविता लिखने के लिए प्रेरित करता। अरविंद ने इस दौरान कई अच्छी कविताएं लिखीं, जो प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में छपी भी। फिर एक दिन अरविंद ने ही मुझे सलाह दी कि रेडियो खरीद लीजिए। अरविंद ने बताया कि वह भी विविध भारती का प्रशंसक है और अपने गाँव में अपनी बहन के साथ रेडियो सुनता था। मेरे मन में विविध भारती के प्रति गहरा लगाव था, लेकिन इधर कुछ समय से मैंने जानबूझकर इसे नज़रअंदाज कर दिया था; अरविंद के जोर देने पर मैंने तय किया कि एक नया रेडियो खरीद लेते हैं और तब एक दिन मैं और अरविंद रेडियो खरीदने के लिए बाज़ार की ओर चल दिए।

यह शायद वर्ष 2008 या 09 की बात होगी, मुझे ठीक से याद नहीं, हम दोनों रेडियो खरीदने बाज़ार की ओर चले; लेकिन हमें बाज़ार में रेडियो खरीदने के लिए काफी भटकना पड़ा। ऐसा इसलिए क्योंकि अब बाज़ार में धीरे धीरे रेडियो बिकना बंद हो गई थीं; रेडियो बेचने वालों ने अपनी दुकानें बंद कर लीं या फिर अपना धंधा बदल लिया था। अगर कहीं कहीं पर रेडियो बिक भी रहे थे तो डिजिटल वाले; जिसमें एफ एम बैंड ही सुने जा सकते थे; किंतु मुझे तो वह रेडियो चाहिए था जिसमें एफ एम बैंड न होने पर भी सामान्य रेडियो चैनल सुने जा सकें। अंततः एक दुकान में हमें फिलिप्स कम्पनी का रेडियो मिल गया। संयोग से इस दुकान पर सिर्फ़ दो ही रेडियो बचे हुए थे। उनमें से एक रेडियो मैंने खरीद लिया और फिर विविध भारती से नया नाता शुरू हो गया। मैं कमरे में रेडियो सुनता। हर शाम 4:00-5:00 बजे तक रेडियो पर कुछ विशेष कार्यक्रम आते, जो कि अब भी आते हैं; विविध भारती की भाषा में कहूँ तो - पिटाराऽ.....वैसे तो पिटारा हर रोज़ खुलता है, इसे खोलते रहिए और सुनते रहिये.....पिटारा। विविध भारती से खुलने वाला 'पिटारा' मुझे बेहद पसंद है।

मैंने 2007 में एमए पास कर लिया, किंतु बीएचयू हमेशा आता जाता रहता; इसका कारण था बीएचयू का वृक्षों से आच्छादित सुरम्य परिसर। बीएचयू का परिसर इतना मोहक है कि जिसने एक बार यहाँ से पढ़ाई कर ली, उसे यहाँ के परिसर से विशेष लगाव हो जाता है; वह इसे कभी भूल नहीं सकता। मैं यहीं से आगे पीएच.डी. करना चाह रहा था, इसलिए मैं कई बार यहाँ आ जाता और पढ़ाई करता रहता। मैं कई बार बीएचयू जाते वक्त अपने पास एक बैग रख लेता; बैग इतना बड़ा था कि उसमें आसानी से मेरी किताबों के साथ रेडियो आ जाता। मैं कई बार डेलीगेसी में पढ़ाई करता; डेलीगेसी के बगल में ही स्थित मैत्री जलपान गृह में दोपहर का भोजन कर लेता; फिर ठीक 4 बजे मैदान की ओर निकल जाता। बीएचयू में कई खुले मैदान हैं, मैं मैदान में किसी पेड़ के नीचे बैठकर 5 बजे तक विविध भारती का आनंद उठाता।

वर्ष 2009 के अक्टूबर में मेरा बीएचयू में पीएच.डी में नामांकन हो गया। पीएच.डी. के दौरान भी रेडियो पर विविध भारती सुनने का सिलसिला लगातार जारी रहा। वर्ष 2011 के जुलाई या अगस्त माह में मैंने नया मोबाइल खरीदा। जिसमें रेडियो के एफ एम बैंड को सुनने का फीचर था। इसलिए अब विश्वविद्यालय परिसर में आते समय बैग में भरकर रेडियो लाने की ज़रूरत नहीं रही; मैं अपनी जेब में रखे मोबाइल के माध्यम से विविध भारती को लेकर कहीं भी आ जा सकता था। मोबाइल पर विविध भारती सुनने का मज़ा ही कुछ और है, इसमें आवाज़ साफ साफ सुनाई पड़ती, कहीं कोई व्यवधान नहीं, मीटर की सुइयों को घुमाने का कोई झंझट नहीं। धीरे धीरे विविध भारती से मेरी यारी तथा आशिकी और भी बढ़ती गई।

विवाह के उपरान्त भी विविध भारती से लगाव बना रहा; किंतु मैं अब धीरे-धीरे व्यस्त होने लगा था। लेकिन इन व्यस्तताओं के बावजूद मैं विविध भारती के कुछ कार्यक्रम ज़रूर सुना करता; जैसे- उजाले उनकी यादों के, आज के मेहमान, सरगम के सितारे, इनसे मिलिए, आज के फ़नकार, जिज्ञासा, सिनेमा के नक्षत्र इत्यादि; इन कार्यक्रमों का समय तय था। इसलिए मैं कोशिश करता कि इन कार्यक्रमों के प्रसारण के समय घर से बाहर न निकलना पड़े। मैं कोशिश करता कि अपने काम पहले से ही निपटा लूँ , ताकि जिस समय विविध भारती के कार्यक्रम आए मैं उन्हें इत्मीनान से सुन सकूँ, किंतु ऐसा हमेशा नहीं हो पाता, कोई न कोई काम ज़रूर निकल आता और मैं अपना मनपसंद कार्यक्रम सुन नहीं पाता। तब मैंने विविध भारती के अपने पसंदीदा कार्यक्रमों को रिकॉर्ड करना शुरू किया।

विविध भारती के अपने पसंदीदा कार्यक्रमों की रिकॉर्डिंग को लेकर मेरे कुछ मज़ेदार अनुभव हैं। वाराणसी में ही एक जगह है- रामनगर। यहाँ पर प्रत्येक वर्ष दशहरा के आसपास रामलीला का मंचन होता है। रामनगर की रामलीला कुछ विशेष है। इसका कारण यह है कि रामनगर की रामलीला एक मंच पर न होकर कई मंचों पर आयोजित होती है। रामचरितमानस' की कथा के अनुसार राम लक्ष्मण जब अयोध्या से लंका की ओर गमन करते हैं तो रामलीला में राम लक्ष्मण बने कलाकार एक जगह से दूसरी जगह चले जाते, और दर्शक भी उनके पीछे पीछे चले आते। यूनेस्को ने रामनगर की रामलीला को वर्ल्ड हेरिटेज घोषित किया है। भारत में एक सरकारी संस्था है- इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, इसने कई महत्वपूर्ण कामों का दस्तावेजीकरण किया है। इसने रामनगर की रामलीला पर भी 2014 के सितम्बर-अक्टूबर में एक डॉक्यूमेंट्री बनाने का निश्चय किया। बीएचयू में अंग्रेज़ी विभाग के प्रोफेसर संजय कुमार से मुझे इस संबंध में जानकारी मिली; उन्होंने मुझे बताया कि आईजीएनसीए रामनगर की रामलीला पर